आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023
Received:10/09/2023; Accepted:15/09/2023; Published:24/09/2023

बहुभाषी समाज में हिन्दी भाषा का महत्व

डॉ. ज्योति ज्ञानेश्वरी
प्रवक्ता,
विश्वविद्यालय कालेज,मंगलूरु
कर्नाटक

डॉ. ज्योति ज्ञानेश्वरी,**बहुभाषी समाज में हिन्दी भाषा का महत्व** , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023, (429-431)

भाषा मनुष्य के भावों और विचारों की सहज अभिव्यक्त का माध्यम है। भाव और विचार मनुष्य में जन्मजात होते हैं, किन्तु उनकी अभिव्यक्ति का माध्यम जन्म-जात और परिवेशगत होते हैं। बच्चा सर्वप्रथम अपनी माँ से जो भाषा सीखता है, वही मातृभाषा है। अगर किसी कारणवश बच्चा अपने परिवार से अलग हो जाता है तो वह जिस परिवेश में रहता है उसी परिवेश की भाषा सीखता है। जैसे कार्टोन नेट्वर्म में प्रसारित 'मोगली' नामक एक चरित्र, जो अपने माता-पिता से बिछड जाता है और जंगल में रहने के कारण वह पशु की भाषा से ही व्यवहार करता है। भाषा तथा मानव का अदिम एवं गहन संबंध है। बिन भाषा के मानव अधूरा है, उसके विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मूक-बाधिर भी अपनी सांकेतिक भाषा से अपने भावों और विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। किसी भी राष्ट्र की संस्कृति उसकी भाषा, संगीत, खान-पान, पहनावा तथा धर्म में निहित होती है। भाषा के द्धारा वह पनपती है।

विशाल भारत में १८ भाषाएं राज्यों तथा संघ द्धारा स्वीकृत हैं। उन १८ भाषाओं में हिन्दी भाषा भी एक है। हिन्दी में समाज, देश या प्रदेश को समेटने की शक्ति है। यह भूत को वर्तमान से जोडकर सभ्यता एंव संस्कृति की झलकियाँ दिखते हुए भविष्य का सफर तय कर रही है। हिन्दी भाषा नित्य बहती हुई गंगा नदी है, जो अपनी समुंदर सी गोद में सारी छोटी-बडी भारतीय भाषाओं को शामिल कर लेती है और उसकी रक्षा करती है। आचार्य हजारीप्रसाद द्धिवेदी के शब्द है- "हिन्दी साधारण जनता की भाषा है। जनता के लिए ही उसका

जन्म हुआ था और जब तक वह अपने को जनता के काम की चीज बनाये रहेगी, जनचित में आत्मबल का संचार करती रहेगी"।

हिन्दी के राष्ट्रीय संदर्भ का एक पक्ष उसका राजभाषा रूप है और दूसरा रूप आचार्य द्विवेदी के उपर्युक्त शब्दों में है। हिन्दी के ऐतिहासिक स्वरूप, भाषिक संदर्भ पर दृष्टि डाली जाय तो यह स्पष्ट है कि हिन्दी समस्त देशवासियों की चेतना, वाणी और बोध को अपने में समाया है। समस्त राष्ट्र की पहचान-परक शब्दावाली को अपने में समेटे हैं। जन-साधारण से अधिक निकटता के कारण हिन्दी का भाषिक रूप खासकर बोलचाल का रूप समस्त भारत में प्रचलित है। हिन्दी भाषा का जो सौंदर्यबोध है वह रचनाकार की रचानाओं में झलकता है। इसके साथ वह देश के विभिन्न भागों के विभिन्न भाषा-भाषी लोगों के साथ भी अपनी रचना को पहुँचाने में सफल है। भारत जो कई भाषाओं, संस्कृतियों का भंडार है उसे हिन्दी भाषा ने एक सूत्र में पिरोया है। हिन्दी को संपर्क भाषा का व्यावाहारिक रूप देने के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं तथा हिन्दी के बीच विचार विनिमय, अंतर्भारतीय भाषाओं के बीच सीधे अनुवाद के कार्य को बढावा देना है। इस हेतु कार्यशालाएँ, गोष्टियाँ, पत्रिकाओं इत्यादि को बढावा देना चाहिए। गौर-हिन्दी भाषा राज्यों के छात्रों को, अधिक छात्रवृत्ति देकर हिन्दि भाषी राज्यों में हिन्दी माध्यम में पढने के लिए उत्साहित करना चाहिए। शिक्षा के प्राथमिक स्तर में हिन्दी भाषा सीखने के लिए दृश्य-श्रव्य माध्यमों का उपयोग होना चाहिए। तकनीकी विषयों में लेखन-पठन तथा अनुसंधान के लिए हिन्दी को विशेष प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

हिन्दी विश्व की दूसरी सबसे बडी भाषा है। भारत से बाहर करीब १७० विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन और अध्यापन का कार्य नियमित रूप से चल रहा है। वैशवीकरण के इस दौर में हिन्दी का प्रचार-प्रसार तथा उसकी माँग दिन-प्रतिदिन बढती जा रही है। विश्व की शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका ने भी अपने विश्वविद्यालयों में हिन्दि के अध्ययन तथा अध्यापन की व्यवस्था की है। कम्प्यूटर साफ्टवेयर की दुनिया में अपना परचम लहरानेवाले बिल गेट्स ने भी हिन्दी के महत्व को समझा और उसने हिन्दी भाषा के लिए साफ्ट्वेयर बनाया। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपनी कर्मचारियों को हिन्दी का प्रशिक्षण देना अब अनिवार्य कर दिया है। रोजगार, शिक्षा. व्यापार धर्म राजनीती, साहित्य, संस्कृति सूचना प्रोद्योगिकी आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी भाषियों के लिए काफी संभावानाएँ है।

आम आदमी की पहली चिन्ता रोजी-रोटी की है। विश्व स्तर में हिन्दी भाषा रोजी-रोटी का माध्यम बन गया है। अंतर्राष्ट्रिया स्तर पर हिन्दी भाषा की लोकप्रियता अधिक रहने के बावजूद इसका अनादार, उपेक्षा और दुष्प्रचार भारत में और भारतवासियों द्धारा ही अधिक हो रहा है। इसका मुख्य कारण है भारतवासियों की मानसिकता। इस मानसिकता को बदलने के लिए सामाजिक व्यवस्था में बदलाव लाना अनिवार्य है। जैसे किसी

नौकरी की योग्यता मापते समय उसे अंग्रेजी से तभी मापा जाए जब उस कार्य के संपादन के लिए अंग्रेजी आवश्यक हो।

भाषा का विषय बहुत गंभीर है। यह मानव जीवन के अस्तित्व का प्रश्न है। भाषा के बिना किसी समाज, किसी राष्ट्र का अस्तित्व ही नहीं रहेगा। भाषा मात्र विचारों के संप्रेषण का माध्यम नहीं है। वह एक भूगोल के इतिहास को, समाज के बीच जीवन को जीवन्त रखने का माध्यम है। यदि हमारी भाषा चली गई तो हमारा भी विनाश हो जाएगा। विश्व में दूसरी बडी आर्थिक शक्तिशाली एक छोटा-सा देश जापान समस्त कार्य अपनी भाषाओं के माध्यम से करते हुए विश्व के अग्रणी देश बन सकता है तो हम क्यों नहीं? भारतीय भाषाओं में जीवन जीने से ही भारत देश भारत रहेगा।, उन्नती करेगा, सामार्थ्यवान देश बनेगा। विश्व की अग्रिम पंक्ति में सम्मानपूर्वक खडा होगा।

सहायक ग्रंथ:

दुबे. महेन्द्र नाथ और दुबे मीनाक्षी(२०१०) भाषा, भाषा-विज्ञान और राजभाषा हिन्दी. नयी दिल्ली. वाणी प्रकाशन.

****